मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) में प्रतिपादित नवीन बिन्दुएँ

चेतना में निर्भ्रमता

पदार्थ से चेतना का निष्पत्ति नहीं है

(भौतिकवादी विचार ✗

चेतना से पदार्थ (लोक) का निष्पत्ति नहीं है

(अध्यात्मवादी चिंतन ✗

चैतन्य इकाई + पदार्थ + उर्जा-चेतना का अविभाज्य वर्तमान

(सहअस्तित्ववादी चिंतन) ✓

ऊर्जा में स्पष्टता

पदार्थ, ऊर्जा में बदलता नहीं है

ऊर्जा, पदार्थ में बदलता नहीं

(भौतिकवादी विचार ✗

चैतन्य, ऊर्जा (ब्रह्म) में बदलता नहीं है

ऊर्जा, चैतन्य में बदलता नहीं

(अध्यात्मवादी चिंतन ✗

चैतन्य इकाई (जीवन) ही पदार्थ संसार का दृष्टा है,

पदार्थ और चैतन्य व्यापक(शून्य-उर्जा-चेतना) में बनें रहते हैं

(सहअस्तित्ववादी चिंतन) ✓

सहअस्तित्ववादी ज्ञान से ✓

अस्तित्व

अस्तित्व व्यापक वस्तु (सत्ता) में भीगा, डूबा,घिरा जड़ चैतन्य प्रकृति रूप में नित्य वर्तमान है |

यही सह-अस्तित्व है |

चैतन्य

चैतन्य इकाई (जीवन) एक गठनपूर्ण परमाणु है, अविनाशी है | इसमें एक मध्यांश और ४ परिवेशों में अंश हैं | जीवन में जीने की आशा है |

जीवन ही मानव रूप में दृष्टा है

भ्रम -जागृति

जीवन सुखी होना चाहता है |
जीवन ही अज्ञानवश भ्रमित, दुखी रहता है और ज्ञान पूर्वक जागृत, सुखी, समाधानित होता है | मानवीयता पूर्वक जीता है |

यही चैतन्य -जीवन लक्ष्य है

|| ब्रह्म सत्य ; जगत शाश्वत है ||

(शून्य रूपी सत्ता की ब्रह्म संज्ञा है, इसमें जीव-जगत नित्य है)

|| इश्वर एक; देवी-देवतायें अनेक ||

(व्यापक रूपी खाली स्थान, शून्य की ही इश्वर संज्ञा है, शरीर काल उपरांत जागृत चैतन्य इकाइयों की देवी-देवता संज्ञा है)

|| चैतन्य इकाई (जीवन) अविनाशी है, अमर है ||

(मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि एवं मध्यस्थ क्रिया चैतन्य जीवन के अविभाज्य अंग हैं, क्रियाएं हैं)